विद्या भवन बालिका लिद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत विषयशिक्षक श्यामउदय सिंह

ता: 12-04-2021 (एन.सी.ई.आर.टी. पर आधारित)

- **श्लोक 4.**

  कञ्चित् कालं नय मामस्मान्नगराद् बहुदूरम् ।
  प्रपश्यामि ग्रामान्ते निर्झर-नदी-पयः पूरम् ।।
  एकान्ते कान्तारे क्षणमपि मे स्यात् सञ्चरणं ।शुचि.....।।

- शब्दार्थ

  कञ्चित् -कुछ
  कालम् -समय
  नय - ले चलो
  बहुदूरम् -बहुत दूर
  प्रपश्यामि - देखता हूँ
  एकान्ते - एकान्त में
  कान्तारे -जंगल में
  क्षणमपि -क्षणभर भी
  मे - मेरा
  स्यात् -हो
  सञ्चरणम् -भ्रमण (घूमना)

- सरलार्थ - कुछ समय के लिए मुझे इस (प्रदूषित) नगर से बहुत दूर ले चलिए,जहाँ मैं गांव की सीमा पर जल से भरी हुई नदी और झरने को देखूँ।एकान्त जंगल में मेरा क्षणभर के लिए भी भ्रमण होवे।इसलिए शुद्ध पर्यावरण ही हमारी शान है।